بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 27 सितम्बर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

ख़न्दक नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत नबवी ﷺ का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-27.09.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बः में भी वर्णन किया था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी उन परिस्थितियों का वर्णन फ़रमाया है जो अहज़ाब की लड़ाई में घटित हुईं।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि चूँकि मदीने का काफ़ी भाग खाईयों के कारण सुरक्षित था तथा दूसरी ओर कुछ पहाड़ी टीले तथा कुछ पक्के भवन एवं कुछ बाग़ इत्यादि थे इसलिए सेना यकायक हमला नहीं कर सकती थी। अतएव काफ़िरों ने विचार विमर्श करके सोचा कि किसी तरह मदीने में मौजूद यहूदी क़बीले बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लिया जाए तथा इसके माध्यम से मदीने तक पहुंचने का रास्ता खोला जाए। बनू नज़ीर के सरदार ह्यी बिन अख़तब को नियुक्त किया गया कि बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिलाने की कोशिश करे। पहले तो बनू क़ुरैज़ा के सरदारों ने इंकार किया परन्तु फिर ह्यी बिन अख़तब के हरे हरे बाग़ दिखाने पर वे समझौता तोड़ने के लिए तय्यार हो गए। बनू क़ुरैज़ा मुसलमानों के दोस्त थे तथा यदि वे युद्ध में शामिल न भी होते, तब भी मुसलमान यह आशा रखते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई हमला नहीं कर सकेगा। इसी कारण से उनकी ओर का भाग पूर्णतः असुरक्षित छोड़ दिया गया था। ऐसे समय पर बनू क़ुरैज़ा का दुश्मन के साथ मिलने से मदीने पर हमले की आशंका भी अधिक हो गई थी। अतएव इन परिस्थितियों में

मुसलमानों की आशंका स्वभाविक थी तथा इसके रोक थाम की भी आवश्यकता थी। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की रक्षा के लिए पाँच सौ लोगों को नियुक्त करने का निश्चय किया। बनू क़ुरैज़ा के समझौता तोड़ने की ख़बर मुसलमानों तक पहुंच गई तो उनका भय और अधिक हो गया तथा महिलाओं एवं उन बच्चों की चिंता होने लगी। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली तो आप स. ने हज़रत सलमा बिन असलम रज़ी. को दो सौ लोग तथा हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को तीन सौ लोगों के साथ मदीने की सुरक्षा के लिए भेजा और फ़रमाया कि रात के समय वे विभिन्न स्थानों पर पहरा दें तथा समय समय पर तकबीर अर्थात अल्लाहु अकबर के नारे लगाते रहें।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. ने इसको इस प्रकार बयान फ़रमाया है कि इस स्थिति ने जिसकी वास्तविकता किसी बुद्धिमान व्यक्ति से छिपी नहीं रह सकती, दुर्बल मुसलमानों में बड़ी व्याकुलता एवं आशंका पैदा कर दी। कुछ मुनाफ़िक़ों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर यह कहना शुरु कर दिया कि या रसूलुल्लाह स.! नगर में हमारे मकान पूर्णतः असुरक्षित हैं, आप स. आज्ञा दें तो हम अपने घरों में ठहर कर उनकी रक्षा करें। जिसके उत्तर में वही अवतरित हुई- وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۛ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا अर्थात- यह ग़लत है कि इन लोगों को अपने घरों के असुरक्षित होने की आशंका है बल्कि बात यह है कि युद्ध स्थल से भागने का बहाना ढूंड रहे हैं। अतः ऐसे भयावह समय पर मुसलमानों की छोटी सी जमाअत, जिनमें कुछ कमज़ोर स्वभाव के लोग तथा कुछ मुनाफ़िक़ भी शामिल थे, क्या मुक़ाबला कर सकती थी? कई बार परिस्थितियाँ अति आशंका जनक अवस्था धारण कर लेतीं तथा लगता कि किसी कमज़ोर अवसर से लाभ उठा कर काफ़िरों की सेना नगर की सीमा में दाख़िल हो जाए। इन हमलों का मुक़ाबला मुसलमानों की ओर से साधारणतः तीर के द्वारा किया जाता था।

ये दिन मुसलमानों के लिए अत्यंत कठिनाई एवं दुविधा एवं आशंका जनक थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन परिस्थितियों में सअद बिन मुआज़ रज़ी. तथा सअद बिन अबादा रज़ी. से फ़रमाया कि यदि तुम लोग चाहो तो ग़तफ़ान नामक क़बीले को कुछ भाग वसूली में से देकर इस युद्ध को टाल दिया जाए। इस पर दोनों ने एक साथ कहा कि या रसूलुल्लाह स.! जब हमने शिर्क की हालत में भी कभी किसी दुश्मन को कुछ नहीं दिया तो अब मुसलमान होकर क्यूँ दें। वल्लाह! हम इन्हें तलवार की धार के अतिरिक्त कुछ नहीं देंगे। चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्सार ही के कारण अधिक चिंता थी जो मदीने के मूल निवासी थे तथा सम्भवतः इस विचार विमर्श में आप स. का उद्देश्य भी केवल यही था कि अन्सार की मानसिक स्थिति का पता लगाएँ कि क्या वे इन कठिनाईयों से परेशान तो नहीं हैं और यदि वे परशान हों तो उनको संतुष्टि दें। आप स. ने पूरी ख़ुशी से उनका सुझाव स्वीकार किया तथा युद्ध जारी रहा।

इस दुविधापूर्ण स्थिति में विभिन्न स्थानों पर पहरे में स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मौजूद होते। मदीने की ये रातें कठोर शीत ऋतु की रातें थीं तथा भूख की कठिनाईयाँ इनके अतिरिक्त थीं। हज़रत आयशा रज़ी बयान करती हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतने थके हुए थे

कि फ़रमाया- काश, कोई नेक आदमी होता तो पहरा देता। सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी. ने कहा या रसूलुल्लाह स., मैं आप स. की सुरक्षा के लिए पहरा देता हूं। आप स. ने फ़रमाया- अमुक स्थान पर जाओ, वहाँ खाई का एक भाग कमज़ोर है, वहाँ पहरा दो। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलिदानी सहाबियों का भी आप स. से वफ़ा का अद्भुत रंग था। इस तरह वे अपने आपको पेश कर रहे हैं तथा दूसरी ओर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात पर इन सबको प्राथ्मिकता दे रहे थे। ऐसे दलेर को अपने प्राण की कोई चिंता नहीं, मदीने वालों की चिंता है तथा इसके लिए स्वयं जगह जगह मौजूद होते हैं तथा कभी प्रत्यक्षतः विश्राम करने के लिए तम्बू में तशरीफ़ लाते भी हैं तो उस समय का अधिकांश भाग ख़ुदा के समक्ष सिर को सजदे में रख कर दुआएँ करते हुए नज़र आते हैं। इस युद्ध के समय हज़रत सफ़िया रज़ी. के शौर्य की एक घटना भी मिलती है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. लिखते हैं कि महिलाओं तथा बच्चों को नगर के एक विशेष भाग, जो एक प्रकार के क़िले जैसा था, में रखा जाता था तथा उनकी रक्षा के लिए केवल ऐसे पुरुष रह जाते थे जो किसी कारणवश युद्ध के मैदान में जाने के योग्य न हों। यहूदियों ने एक अवसर पर जासूसी के उद्देश्य से अपना एक आदमी उस मुहल्ले में भेजा। उस समय संयोगवश महिलाओं के पास केवल एक सहाबी हस्सान बिन साबित रज़ी. मौजूद थे। महिलाओं ने जब उस दुशमन यहूदी को ऐसी संदिग्ध स्थिति में अपने निवास स्थान के निकट चक्कर लगाते देखा तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुआ सफ़िया बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ी. ने हस्सान रज़ी. से कहा कि इसकी हत्या कर दो। परन्तु हस्सान रज़ी. को इसका साहस न हुआ जिस पर हज़रत सफ़िया रज़ी. ने स्वयं आगे निकल कर उस यहूदी का मुक़ाबला किया, उसे मार कर गिरा दिया और उसका सिर काट कर यहूदियों की सीमा में गिरा दिया ताकि यहूदियों को मुसलमान महिलाओं पर हमला करने का दुस्साहस न हो तथा वे यह समझें कि उनकी सुरक्षा के लिए इस जगह काफ़ी पुरुष मौजूद हैं। अतएव यह युक्ति काम कर गई तथा यहूदी लोग निराश होकर वापस चले गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी इस घटना को बयान करते हुए फ़रमाया कि अनुसंधान से पता चलता है कि वह यहूदी था तथा बनू क़ुरैज़ा का जासूस था तो मुसलमान और अधिक घबरा गए तथा समझे कि मदीने की यह दिशा भी सुरक्षित नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महिलाओं की सुरक्षा को प्रमुख समझा तथा बारह सौ में से पाँच सौ सैनिकों को महिलाओं की सुरक्षा हेतु नगर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की रक्षा एवं अठारह बीस हज़ार की सेना के मुक़ाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए।

हज़रत अली रज़ी. का उमरू बिन अब्दु वद्द की हत्या करने की घटना भी मिलती है। उमरू बिन अब्दु वद्द ऐसा बहादुर था कि अरब में एक हज़ार पुरुषों के समान समझा जाता था। यह अपने दोस्तों के साथ खाई को पार करके आया तथा अति अहंकार से आवाज़ लगाई कि ऐ जन्नत की अभिलाषा करने वालो, आओ मैं तुम्हें जन्नत में पहुंचा दूँ अथवा तुम मुझे नर्क में भेज दो। जब उसने दूसरी या तीसरी बार आवाज़ दी तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपनी पगड़ी हज़रत अली रज़ी. के सिर

पर बांधी तथा तलवार प्रदान की तथा दुआ देते हुए मुक़ाबले पर भेज दिया। उस व्यक्ति ने मुक़ाबला किया तथा हज़रत अली रज़ी. ने उसका वध कर दिया। उसकी हत्या के बाद उसके साथी भाग गए। एक कथन के अनुसार ज़िरार बिन ख़त्ताब जो कि हज़रत उमर रज़ी. का भाई था, यह जब भागा तो हज़रत उमर रज़ी. ने उसका पीछा किया। सहसा ज़िरार रुका और हज़रत उमर रज़ी. पर भाले से हमला करने को था कि रुक गया एवं हमला नहीं किया। फिर हज़रत उमर रज़ी. को सम्बोधित करते हुए यह कहा कि ऐ उमर, मरा यह उपकार याद रखना कि मैंने तुम पर हमला नहीं किया। ज़िरार का क्या उपकार होना था, हाँ अल्लाह तआला का यह उपकार उस पर हुआ कि मक्का की विजय के अवसर पर यही ज़िरार इस्लाम ले आए, इस्लाम के युद्धों में भरसक सहयोग किया, ख़ूब बहादुरी के जौहर दिखाए तथा यमामा के युद्ध में शहादत पाई। कुछ लोग कहते हैं कि शहादत नहीं पाई बल्कि देर तक जीवित रहे तथा इस्लाम पर निधन हुआ।

कुछ रिवायतों के अनुसार उमरू बिन अब्दु वद्द के बजाए नौफ़िल बिन अब्दुल्लाह एक अवसर पर मारा गया था तथा उसके शव के लिए काफ़िरों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सन्देश भेजा था कि यदि आप स. उसका शव वापस कर दें तो वे दस हज़ार दर्हम आप स. को देने के लिए तय्यार हैं। उन लोगों का तो यह विचार था कि सम्भवतः जिस तरह हमने मुख्याओं बल्कि स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा की नाक और कान ओहद की लड़ाई में काट दिए थे, इसी तरह सम्भवतः आज मुसलमान हमारे इस मुख्या की नाक कान काट कर हमारी क़ौम का अपमान करेंगे। किन्तु इस्लाम के आदेश तो पूर्णतः भिन्न हैं। इस्लाम शवों का अपमान करने की अनुमति नहीं देता। अतएव काफ़िरों का यह सन्देश रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचा तो आप स. ने फ़रमाया- इस शव को हमने क्या करना है? यह शव हमारे किस काम का है कि इसके बदले हम तुमसे कोई मूल्य वसूल करें। अपना शव बड़े चाव के साथ उठा कर ले जाओ, हमें इससे कोई लेना देना नहीं।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में ज़ैली तंज़ीमों के इज्तिमा का वर्णन करते हुए उपदेश दिया कि इन दिनों में विशेष रूप से दुआओं में बहुत समय व्यतीत करें, दरूद पढ़ने की ओर ध्यान रखें। अल्लाह तआला आप सबको इसकी तौफ़ीक़ दे और इज्तिमा के उद्देश्य को पूरा करने की कोशिश करें, न यह कि केवल मनोरंजन के प्रोग्रामों अथवा बातों में समय व्यतीत करें। अल्लाह तआला हरएक दृष्टि से यह बरकत पूर्ण फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131